दिशा प्रकाशन
१३८/१६, त्रिनगर, दिल्ली-११० ०३५

मेरी कहानियाँ

मुद्राराक्षस

मूल्य : बाईस रुपये
सर्वाधिकार : मुद्राराक्षस
प्रथम संस्करण : 1983
प्रकाशक : दिशा प्रकाशन, 138/16, त्रिनगर, दिल्ली-35
आवरण : पाली
रेखाचित्र : रणवीरसिंह बिष्ट
मुद्रक : रुचिका प्रिण्टर्स, दिल्ली-110032

MEREE KAHANIYAN (Hindi Short Stories)
by Mudrarakshas
Rs. 22.00

डॉ० धर्मवीर भारती को

दिया। वे बड़बड़ाते हुए पाँव पटकते चले गए।

लड़का वहीं पड़ा रहा। धीरे-धीरे उसने सिर उठाया; बरोठे में अँधेरा छा गया था। बन्द दरवाजे पर उसने थाप दी—'मोनो ! दरवाज़ा खोलो मोनो !' अंधेरा घूमने लगा और वह बन्द ताले पर मत्था गड़ाकर सिसक उठा। अंधेरे में मोनो और उसकी गुड़ियाँ उभर आईं। वे उसे घेरकर नाच-नाचकर गाने लगीं—'कहाँ गँवाई सारी रैन हो !' उसने दरवाजे पर थाप देकर फिर कहा—'मोनो ! मोनो !' वे नाचती हुई छायाएँ उदास होकर बुझ गईं जैसे मोनो की माँ का गीत—'बिरहइ नवल किशोर !' वह सिसकता रहा।

बाहर बैरक से रोटी पकाता हुआ सिपाही कव्वाली की तर्ज पर गा रहा था—

क्यों आग लगाई जाती है,
क्यों दर्द बढ़ाया जाता है !
भइ हमको नसीली आँखों से,
बीहोस बनाया जाता है !

बालासिंह सड़क के नल से पानी लाने चल दिया था; वह भी गा रहा था—

'तेरे पीछे मैं होइयाँ तबा,
तारियाँ नु पुच चनिबे !

और हरिश्चन्द अपने बच्चों को सिखा रहा था—'बेटा देखो, बड़ी वाली लैमन्चूस की गोलियाँ किसी को पैसे की दो से ज़्यादा न देना।' और छोटा लड़का उसकी बात सुनने की अपेक्षा सोच रहा था कि अगर बड़े भाई के कूबड़ पर सवारी गाँठी जाय तो कैसा रहे !

□

कापुरुष

रेत और गर्द की ताँबे जैसी एक खुश्क झिल्ली हल्की-सी हवा के साथ उभरती है और उसपर छा जाती है। कुत्ते की तरह अपना चेहरा झाड़कर वह आँखें मिचमिचाता है। गर्म हवा उसके कान के सिरे को इस तरह छूती है जैसे वहाँ बहुत-सी मकड़ियाँ रेंग रही हों। उसे सिहरन होने लगती है। रेत की झिल्ली उतर जाने पर वह एक बार फिर उसे देखने की कोशिश करता है। आँखें, नाक, गाल, ठोढ़ी, ठोढ़ी पर एक बड़ा-सा तिल, घुँघराले लम्बे बाल, बालों में फीता।

फोटो कभी साफ़-सुथरी रही होगी लेकिन पसीने, धूल और रेतीले गर्म मौसम से बदरंग हो चुकी है। किनारे घिस चुके हैं। इस साल पास हो जायगी—वह सोचता है। खासी सुन्दर है। शादी आसानी से हो जायगी। लेकिन क्या उसके सामने हो सकेगी ? क्या वह इस रेतीली मट्टी से जीता लौट सकेगा ? लेकिन वह चाहता है। कम-से-कम इस बार चाहता है। अपनी एकमात्र बेटी की शादी करने के लिए एक बार जीता लौटना चाहता है। कैसे रहती होगी ? मौसी ठीक से रख पाती होगी ? काश, उसकी माँ होती !

माँ—वह अपनी बीवी का चेहरा याद करने की कोशिश करता है। छह साल हुए मरे। चाहकर भी आकृति याद नहीं आती। अजीब बात है। याददाश्त समय की परत को बेधकर देख नहीं सकती। वही क्या बेटी का फोटो सामने लेने के बावजूद क्या कुछ दीखता है ? कुछ भी नहीं। निरर्थक धब्बों के अलावा और कुछ भी नज़र नहीं आता। कुछ भी नहीं, एक बोल, एक मुस्कराहट—कुछ भी नहीं।

बन्दूक का कुन्दा पेटी के पास चुभता-सा महसूस होता है और वह करवट बदलता है। बेटी की तस्वीर जेब में रखने के बाद दो-तीन बोसीदा से काग़ज़ के टुकड़े निकालता है। एक ही काग़ज़ के, घिसकर अलग हुए तीन हिस्से। गर्म बालू पर उभरे पत्थर की सतह पर वह एक-एक कर तीनों टुकड़े एक-दूसरे से सटाकर बिछाता है। एक आकृति उभर आती है—किसी नंगी औरत की तस्वीर। जाने कब, कहाँ, किसी मलबे पर उड़ती मिली थी यह। तब से जेब में है—अक्सर निकलती है। जब कोई आकृति याद नहीं आती उस वक्त वह इसे निकालता है, कहीं बिछा लेता है और देखने की कोशिश करता है। कभी दीखा था इसमें। ख़ासा कुछ दीखा था। पर धीरे-धीरे वह दीख धुँधली होती गई। काग़ज़ के सिर्फ़ तीन टुकड़े हुए लेकिन उस नंगी औरत की तस्वीर का हर रेज़ा बिखर गया।

टुकड़े जोड़कर वह देर तक उसपर अपने-आपको साधने की कोशिश करता रहा लेकिन आख़िरकार उसे लगा जैसे वह उस सीढ़ी पर पैर टिकाने की कोशिश कर रहा है जो वहाँ नहीं है।

गर्म हवा के साथ रेत की एक और झिल्ली उड़कर उसपर तैर गई। काग़ज़ों को सहसा समेटकर वह उठ पड़ा। रेत की एक झिल्ली और।

इसके बाद उसके रोएँ इस तरह खड़े हो गए जैसे ख़ौफ़ खाई हुई बिल्ली के बाल भरभरा आते हैं। पाँवों का ख़ून सर्द हो गया किसी तरह उसने पीछे की तरफ खाइयों के किनारे उठे ढूहों की तरफ़ देखा। क्या अब भागा जा सकता है? बन्दूक उठाई जा सकती है?

सामने से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे बहुत से गीदड़ और गीध मुर्दों पर टूट रहे हों। लोहे की चर्खियों और जंजीरों से ऐसी ही आवाज़ निकलती है?

टैंक—टैंक ही हो सकते हैं। भारी-भारी, काले सूअरों की तरह दौड़ते आते टैंक, दुश्मनों के। उसने चीख़ना चाहा पर उससे चीख़ा न जा सका। हाँ वह भागा—सिर्फ़! बेतहाशा। भागते हुए उसे लग रहा था कि अचानक या तो मशीनगन की बौछार उसकी पीठ के चीथड़े उड़ा देगी या फिर टैंक का एक गोला उसके सहित उसके नीचे की ज़मीन उड़ा देगा। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। पैंजर डिवीज़न के वे डरावने टैंक बिना किसी प्रतिक्रिया

के सिर्फ़ आगे धँसते आ रहे थे। किसी सील मछली की तरह छलाँग लगा कर वह सामने की खाई में गोता लगा गया। खाई में अजीब सकता छाया हुआ था। लोग बार-बार अपने नाकाफी हथियारों को देख रहे थे और फिर उन टैंकों को। अगली पाँत में दो सिपाही बार-बार बन्दूक पर बज़ूका चढ़ाने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उनकी हथेलियाँ पसीने से भीगी थीं और उँगलियाँ इस क़दर काँप रही थीं कि बज़ूका लग ही नहीं पा रहा था। बार-बार बेतार से बात करते अँग्रेज़ कम्पनी के कमाण्डर के होंठ बुरी तरह काँप रहे थे और चेहरा जस्ते की तरह खुरदरा और सफ़ेद हो गया था। अचानक उसने हेडफ़ोन उतारकर पटका और उछलकर खाई से बाहर निकल आया। बाहर से एक क्षण के लिए उसने घूमकर पीछे देखा। टैंकों की क़तार धूल की दीवार के साथ-साथ इस तरह आगे बढ़ रही थी जैसे किसी मैदान में सैकड़ों अरने भैंसे कहीं टूट पड़ने को झुण्ड मारकर झपट रहे हों।

कम्पनी कमाण्डर के गले से ऐसी आवाज़ निकली जैसे किसी बन्दर ने बिजली का तार छू लिया हो। दूसरे ही क्षण किसी भद्दे गोह की तरह चारों हाथ पैरों पर भागता हुआ वह पीछे की तरफ़ चल दिया। दोनों आदमियों ने बज़ूके घुटनों के पास रख दिए। एक-दूसरे की ओर देखा और बन्दूकों के सहारे उछलकर खाई से बाहर निकले। थोड़ा-सा ठिठके और उसी तरह भागते चले गए। इसके बाद, एक पर एक, सिपाही बाहर निकल कर पीछे की तरफ़ भागते गये।

वह भी उन्हीं के साथ उछला। उसे लगा शायद इस बार ज़रूर गोलों या गोलियों की बौछार होगी। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। उसने पीछे देखना चाहा लेकिन देखने की हिम्मत न हुई। रेत पर डरे हुए पशु की तरह रेंगता हुआ वह तेज़ी से भाग चला। चारों हाथ पैर से भी आदमी कितनी तेजी से भाग सकता है? वह ठहरा या ठिठका नहीं। बेढंगे तरीके से कूल्हे उचका कर हाथ और पैरों पर शरीर उछालता हुआ वह भागता रहा। और भी कोई साथ है या नहीं और वह स्वयं ठीक दिशा में भाग रहा है या नहीं, उसने नहीं सोचा। लेकिन वह जितना भागता जा रहा था उतनी ही टैंकों की आवाज़ नज़दीक आती जा रही थी।

पैर बालू में धँस रहे थे और हथेलियाँ पत्थरों पर घिस रही थीं। आँखें वह खोले था या नहीं, उसे खुद नहीं मालूम। उसने महसूस किया कि इतने के बावजूद वह लड़खड़ाया नहीं। लेकिन अगले ही क्षण वह बुरी तरह आगे की तरफ़ उछलकर सिर कटे हुए मुर्गे की तरह गिरा। बाईं ओर चेहरा किसी पत्थर से टकराया। सिर्फ़ एक गहरी झनझनाहट हुई और चेहरे का वह हिस्सा शून्य हो गया। टटोलकर देखने पर लगा कि चेहरे का वह भाग है वहीं लेकिन वहाँ स्पर्श का अनुभव नहीं था।

शायद अब नहीं भागा जा सकेगा। लेकिन फिर होगा क्या? ये रौंदते आते टैंक? आख़िर ये इतनी खामोशी से आगे क्यों बढ़ रहे हैं? गोले क्यों नहीं चलाते? वह पलट कर कुहनियों के बल लेट गया। झटके से बन्दूक कंधे से उतारी और बग़ैर कुछ देखे टैंकों की कतार की ओर गोलियाँ चलाने लगा। तीन-चार गोलियाँ चलते ही टैंकों की तरफ़ से मशीनगनों की बौछार हुई। गर्म रेत और पत्थरों के नन्हें टुकड़े उसपर रज़ाई की तरह ढक गए।

ठीक है। अब ठीक है। भागने के लिए, कायर होने के लिए भी तो उत्तेजना चाहिए। एक मैगनीज़ और ख़ाली करने के बाद वह उछलकर छिपकली की तरह पीछे हटा। लेकिन वह टिक नहीं सका। चट्टानों, झाड़ियों और रेत के ऊपर टकराता, उछलता किसी फेंके गए बण्डल की तरह वह बराबर नीचे लुढ़कता गया।

पता नहीं कितनी देर बाद उसकी चेतना लौटी। शायद दो घण्टे बाद, शायद दो दिन बाद। जागने पर उसने महसूस किया कि उसका शरीर सूख गया है या उस पर दरख़्त की तरह सख़्त छिलका चढ़ गया है। उसने गर्दन उठाकर अपने शरीर पर निगाह दौड़ाई। ज्यादातर हिस्सा रेत में दबा हुआ था। गर्दन फिर ज़मीन पर टिकाने से पहले एक क्षण में बाएँ हाथ की तरफ़ उसे जिस चीज़ की झलक मिली उसने उसे अचानक और अधिक सुखा दिया। लगा, उसकी रीढ़ की हड्डी के नीचे जहाँ घिसी हुई दुम के अवशेष के रूप में एक गाँठ होती है वहाँ किसी ने गर्म सूजा घुसा दिया हो।

उसकी उँगलियों से लेकर कई गज़ दूर बालू के एक ढूह तक एक चमकीले काले-नीले कोलतार की धार-सी बहती दिख रही थी। वह कोलतार नहीं था। चींटों का एक क़ाफ़िला था—चौड़े-चौड़े जबड़े और धुँधलाई उभरी आँखों वाली बड़ी-बड़ी खोपड़ी वाले असंख्य चींटों का झुंड। उँगलियों के बीच के पोर तक वह काला झुण्ड कोलतार की परत की तरह चिपका हुआ था। सिर्फ़ दूसरे पोर तक; उसके आगे नहीं; शरीर पर और कहीं भी नहीं। उँगलियों के पोरों पर लिपटे चींटों के हिलने-डुलने से बीच की उँगली की लाल-पीली हड्डी तक चमक रही थी।

रीढ़ के निचले सिरे पर धँसा गर्म सूज़ा सूराख़ बनाता हुआ उसकी खोपड़ी के पिछले भाग तक चला गया। बग़ैर बायाँ हाथ हिलाए उसने पेटी से लगी संगीन निकाली, फुर्ती के साथ उँगलियों पर जहाँ तक चींटे लिपटे थे वहाँ ज़ोरदार वार किया। एक बार—एक बार फिर। चींटे तिलमिला कर भागने लगे। जाने किस कायरता की उत्तेजना थी कि वह कटी उँगलियों वाला पंजा ऊपर उठाकर बेतहाशा भागा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे असंख्य चींटों का वह झुण्ड दैत्याकार टैंकों की फौज बनकर उसका पीछा कर रहा होगा। बालू में पाँव घसीट-घसीट कर झाड़ियों का सहारा लेता हुआ वह देर तक भागता रहा।

आखिर एक जगह आकर उसे ऐसा लगा जैसे उसके नीचे बालू नहीं किसी लेसदार पदार्थ का दलदल है और उसके पैर उसमें धँस गए हैं। दो पल खड़े-खड़े हाँफने के बाद वह धीरे-से गर्म बालू पर बैठ गया। बैठते ही अचानक उसकी कटी उँगलियों के बाकी बचे छोरों पर भयानक टीस उठी। लगा जैसे वहाँ हथेली सुलगने लगी हो। और अब वहीं नहीं सारे शरीर में वही सुलगने की सी जलन होने लगी। जगह-जगह छिल-कट गए अंगों पर जो पपड़ियाँ जम चुकी थीं वे चटख़ गई थीं। खून फिर रिसने लगा था। भयानक यन्त्रणा से एक बार वह काँपा और फिर अचानक अपने होंठ काट कर रो पड़ा।

बेहद भोंड़ी आवाज़ में वह, बिना संकोच, बेहयाई के साथ रोता रहा। चिलचिलाती धूप में काँपती लम्बी घास, झाड़ियों और झंखाड़ों की टहनियों के बीच उसकी आवाज़ किसी काटे जाते हुए सूअर की जैसी लग रही थी।

ख़ून और चोट की सूजन से भद्दे हो गए चेहरे पर मोटे-मोटे गँदले आँसू बहते रहे लेकिन उसने उन्हें, पोंछा नहीं। कटा हाथ घुटने पर रखे और दूसरा, संगीन वाला हाथ सूखी घास के एक गुच्छे पर टिकाए वह बुरी तरह रोता रहा।

जैसे अवकाश में, वायुमण्डल की बाधा न होने पर गतिशील पदार्थ कभी रुकने नहीं आता ठीक उसी तरह उसका रोना भी थमने नहीं आ रहा था। कोई व्यवधान, कोई प्रतिरोध, कोई आश्वासन, कोई करुणा, कोई आदेश, कोई अपवाद—कुछ भी तो नहीं था वहाँ और वह रोता हुआ रोता रहा। अन्ततः उसे ख़ुद अपनी मौजूदगी का एहसास होने लगा। उसे अपने रोने की भद्दी आवाज़ भी सुनाई देने लगी। तभी वह रुक गया।

सामने कुछ नहीं था। आस-पास कुछ नहीं थी। बस, रेतीली ज़मीन पर मटमैली झाड़ियों और लम्बी-लम्बी घास का सिलसिला नज़र आ रहा था। उसका गला सूख गया था। क्या कहीं पानी मिल सकेगा ? पानी ?

पानी—वह दुबारा असहाय होने लगा। घोर असहाय। उसकी इच्छा हुई कि वह गले के अन्दर जहाँ पानी के बिना एक खुरचन शुरू हो गई है ठीक वहीं बन्दूक की नली टिकाकर वह गोलियाँ दाग़ ले। पर ऐसा कुछ किया नहीं गया। वह प्यासे, अधमरे घोड़े की तरह सिर्फ़ बार-बार ज़बान होंठों से कण्ठ तक सरकाता रहा।

यन्त्रणा शायद बढ़ती और ज़्यादा बढ़ती जाती लेकिन किसी दूसरे के होने ने, किसी दूसरे अस्तित्व की मौजूदगी ने उसकी जबान रोक दी।

उसके दाहिनी ओर दो-तीन गज़ के फ़ासले पर उगी लम्बी घास के घने झुण्ड के किनारे छिपकली और घड़ियाल के बीच के आकार का कोई जानवर अपनी पथरीली दराँतीदार दुम धीरे-धीरे मरोड़ रहा था और उसके सामने से एक बचकानी आकृति का मोटा, नाटा-सा साँप निश्चित गति से आहिस्ता-आहिस्ता सरकता हुआ उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। घड़ियाल की आकृति वाले बौने, भद्दे जानवर की ज़बान अजीब सनसनी-ख़ेज़ तरीक़े से जबड़ों के बाहर बार-बार निकल रही थी। शायद वह जानवर कुछ अजीब बेचैनी महसूस कर रहा था इसलिए साँप को आगे बढ़ते देखकर उसका जबड़ा खिसियाए हुए तरीके से थोड़ा-सा खुलकर रह गया

और वह आगे की दोनों टाँगों पर थोड़ा-सा ऊँचा होकर ऐसे झूमने लगा जैसे वह चुड़ैल से पीड़ित कोई ख़ब्बीस औरत हो। साँप के और नज़दीक जाने पर खिसियाहट भरा जबड़ा एक बार फिर जैसे खुलने के लिए जुम्बिश लेकर रह गया और ऐसी हल्की-सी आवाज़ सुनाई दी जैसे कोई कुएँ में बैठा झींगे तल रहा हो।

नज़दीक आ जाने पर साँप ने बिल्ली की तरह फुसकार छोड़ी और ठिठक गया। ठिठके रहने के बाद स्प्रिंग के खिलौने की तरह उसने अपनी गर्दन के नज़दीक वाला भाग पीछे खींच लिया।

कटी हुई हथेली में दर्द की एक और लहर उठी। उसने बेबसी के साथ कटी उँगलियों की हड्डियों के आस-पास लिजलिजाते गोश्त और तेज़ी से टपकते ख़ून को देखा। संगीन छोड़कर उसने अँगूठे से कलाई को दाबने की कोशिश की। ख़ून और तेज़ हो गया। उसे लगा कि उसके दिल के अन्दर ख़ून के धक्कों में किसी थके योद्धा की-सी लड़खड़ाहट आ गई है। वह बेचैन होने लगा। क्या यहाँ इस तरह बियाबान में दो निहायत भद्दे पशुओं की शत्रुता की साक्षी में धीरे-धीरे रिसकर उसे मरना होगा ? दो भद्दे जानवर—

उसकी निगाह फिर झाड़ी की तरफ़ उठ गई। उसके लड़खड़ाते ख़ून में एक अजीब उछाल पैदा हो गई। मोटा-नाटा साँप अगले पंजों तक उस भद्दे से जानवर को बुरी तरह लपेटकर दुम की तरफ़ से बड़े धीरज और शालीनता के साथ निगल रहा था। चबा नहीं रहा था, निगल रहा था। हैरत की बात थी कि वह छिपकली और घड़ियाल के बीच का भद्दा-डरावना पशु सिर्फ़ अपने घिनौने दाँत खोले हुए वीभत्स तरीके से हाँफ रहा था। कोई यन्त्रणा नहीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई उत्तेजना नहीं जैसे वह कोई कामातुर, रतिव्यस्त कुतिया हो ! साँप आहिस्ता-आहिस्ता, बड़ी सावधानी और लगन के साथ उसे निगलता जा रहा था और फूलता जा रहा था।

वह इस मितली लाने वाले दृश्य को जड़ होकर देखने लगा—अचानक उसके फेफड़े रुँधने लगे और वह खुद हाँफने लगा। उसकी रानों और पिंडलियों के माँसपेशियों के अन्दर जैसे बहुत-सी छिपकलियाँ रेंगने लगीं। वह उत्तेजित हो गया। एक अजीब ख़्याल उसके जेहन में आया, ख़याल

क्या एक तस्वीर या शायद सिर्फ़ एक अनुभूति। उसे लगा उसकी बीवी—बरसों पहले मर चुकी उसकी पत्नी किसी गन्दे अजनबी की गोद में किसी नंगी मछली की तरह करवटें ले रही है। गन्दा, भद्दा अजनबी—वह, जो शायद खुद नहीं है—

अनुभूति ने उसकी रगों में हरारत भर दी। तीन टुकड़ों में फट चुकी नंगी तस्वीर किसी तीन हिस्सों में टूट गए गोजर की तरह अलग-अलग रेंग चली।

साँप उस छिपकली और घड़ियाल के बीच के जानवर को निगलने के बाद बेढंगे तौर पर सूजकर थका हुआ वहीं घास पर लेटा था। चुपचाप। आँखें खुली होने के बावजूद उसपर एक अज्ञात झिल्ली चढ़ी हुई दीख रही थी।

न जाने किस पाशविक उत्तेजनावश उसने नीचे पड़ी संगीन उठा ली। बाएँ हाथ को ऊपर उठाए हुए वह घुटनों के बल लेटे हुए साँप के क़रीब खिसका। इस विशाल प्राणी को अपनी तरफ़ नाहक सरकते देखकर साँप ने अपने मुँह को हल्की-सी जुम्बिश देकर उसकी तरफ़ मोड़ा और बड़ी ख़ामोश निगाहों से घूरा। वह रुका नहीं, साँप की तरफ़ खिसकता गया। फुर्ती के साथ संगीन वाला हाथ ऊँचा उठा और निष्पलक ताकते साँप के माथे पर गिरा। थके हुए साँप ने संगीन की नोंक छूते-न-छूते अपना फन पीछे खींचा और जबड़ा खोलकर बिल्ली की तरह फुसकारा।

उसने मौक़ा नहीं दिया, जमीन से धँसी संगीन झटके से उखाड़कर दुबारा वार किया। साँप फन को और पीछे नहीं खींच सका—संगीन इसके माथे को छेद कर ज़मीन में धँस गई। अगले ही क्षण शायद साँप के पिछले हिस्से की कड़ी चोट से वह ज़मीन पर लुढ़क गया और साँप ने बल खाकर संगीन सहित अपना फन रेतीली मिट्टी से अलग किया और घास के अन्दर करवटें लेता धँस चला।

गिरने के बावजूद उसने मौका नहीं दिया। दाएँ हाथ से वज़नी बन्दूक उठा ली। वह गोली भी चला सकता था लेकिन इतना कायर होना उसे अच्छा न लगा। मैगज़ीन निकालकर उसने उसे नली की ओर से पकड़ा और घास के बीच बेढंगे तौर पर उलट-पलट कर आगे सरकते साँप पर

भरपूर वार किया। साँप पर पूरी चोट घास की वजह से नहीं लगी लेकिन फिर भी वह अपने-आपसे लिपट गया।

उसने बन्दूक के कुन्दे के दो वजनी वार साँप पर और किए। तिल-मिलाते साँप के फन से संगीन निकल गई और इस बार उलटकर पीछे लपका। खून से लथपथ फटे हुए फैले जबड़े बेहद भयानक हो रहे थे। उसे शायद दीख कुछ नहीं रहा था लेकिन बन्दूक के कुन्दे की चोटें मारने वाली दिशा की गन्ध उसे मिल गई थी।

यही तो चाहिए था। साँप को वह बाहर ही निकालना चाहता था। लेकिन उसके तेजी से पीछे हट न पाने के कारण वेग से झपटा मोटा साँप उसके घुटनों से टकराया और वह खुद साँप के ऊपर आ गिरा। साँप ने धैर्य नहीं दिखाया। दुम के ताकतदार हिस्से से उसने उसके दोनों पैर यों लपेट लिए जैसे गधे को भागने से रोकने के लिए उसकी टाँगों में रस्सी के फन्दे डाल दिए जाते हैं।

लेकिन वह घबराया नहीं। साँप अपने फटे हुए जबड़ों वाले अंधे सिर को पागलों की तरह उसके पुट्ठों से टकराने लगा। साँप के फन से बेपरवाह वह अपने दाहिने पंजे के सहारे घास के झुण्ड की तरफ खिसकने लगा। वज़नी साँप की भयानक जकड़ और ज्यादा सख्त होती जा रही थी। उसकी माँस-पेशियाँ चटखने वाली थीं। लेकिन चौथी या पाँचवीं कोशिश में वह उसके हाथ आ गई—खून से सनी संगीन की मूठ उसने कसकर थाम ली। पशु की तरह वह अपने पैरों की ओर पलटा।

अपने कूल्हे के गोश्त को नोंचने की बेतहाशा कोशिश करते जख्मी फन पर उसने तीन-चार वार किए। जगह-जगह से कट-फट कर भी साँप की पकड़ ढीली नहीं हुई। लेकिन फन पटककर माँस नोंचने की चेष्टा करने के बजाय वह पैरों पर लिपटा हुआ सीधा खड़ा हो गया, जबड़े फाड़े हुए लेकिन चुपचाप।

दो क्षण रुककर उसने संगीन से फिर कई वार किए। साँप के सिर का हिस्सा लत्ते की तरह उधड़ गया। उसकी हड्डी शायद टूट गई क्योंकि फन उसकी कमर के पास थरथराता हुआ लटक गया।

अब जल्दबाज़ी की ज़रूरत नहीं थी। साँप के बहुत सूजे हुए हिस्से पर

एक जगह उसने संगीन की नोंक चुभाई और उसके पेट को दूर तक फाड़ दिया।

उफ़ ! उस भद्दी दरार से उसी छिपकली और घड़ियाल के बीच की शक्ल वाले डरावने जानवर की पीठ दिखने लगी।

उसने संगीन को साँप के एक पतले स्थान पर चुभाकर खींचा तो शायद वहाँ की भी हड्डी अलग हो गई। साँप के फन्दे धीरे-धीरे ढीले होने लगे। मोटा हिस्सा पिंडलियों से अलग होते ही उसने संगीन से वह दरार और लम्बी कर दी। अब तक चुपचाप पड़ा वह जानवर सहसा जैसे जागा और साँप की फटी हुई खाल से तड़प कर बाहर निकल आया। कुछ दूर तेज़ी से भागा और फिर ठिठक गया। थोड़ा-सा झूमा और चारों पंजों पर ऊँचा उठकर स्थिर हो गया। इसके बाद धीरे-धीरे करवट गिरकर थर-थराने लगा।

साँप से मुक्त हो चुके घुटने समेट कर वह उस जानवर की तरफ़ आया। अजीब वीभत्सता उसकी आँखों में थी—एक वहशत। थोड़ी देर उस थरथराते हुए डरावने जीव को वह देखता रहा फिर सहसा उसपर टूट पड़ा। संगीन के गहरे-गहरे ज़ख्मों से उस जानवर के पेट का गन्दा-मटमैला परदा फट गया और घिनौनी आँतें बाहर आ गईं। जानवर ने उसी पहले जैसी तृप्ति के साथ थोड़ा-सा जबड़ा खोलकर हत्यारे की तरफ़ देखा और मर गया।

उसे मार चुकने के बाद उसने सिर्फ बन्दूक उठाई और फिर अचानक इस तरह भागा जैसे चींटों का वही हुजूम उसपर झपटा हो। किसी बेढंगे जानवर की तरह झाड़ियों, झंखाड़ों से उलझता वह दूर तक—देर तक सिर्फ भागता रहा—किसी अंधे, पिटे हुए जानवर की तरह।

अपना बायाँ हाथ जेब में डाले हुए वह थोड़ी देर दरवाजे पर खड़ा रहा। शायद सोचता रहा कि कोई पहचान वाला आएगा और अचानक उससे लिपट जाएगा। लेकिन कुछ न हुआ। ताज़ी धुली निकालकर पहनी वरदी पर नज़र डालकर उसने अपना सन्दूक नीचे रख दिया। आहिस्ता से दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाज़ा खुला पहले थोड़ा, फिर सहसा पूरी तरह खुल गया। चीख़ जैसी गहरी साँस उसने ली जिसने दरवाज़ा खोला था।

खुले दरवाजे पर दीखी आकृति को सीने से लगा लेने के लिए उसका दाहिना हाथ आगे आया पर तभी विचित्र संकोच से चेहरा घुमाकर वह अन्दर भाग गई।

इतनी बड़ी हो गई है ?—उसने सोचा और सन्दूक उठाकर अन्दर दाखिल हो गया।

चाही हुई कोई हलचल दीखी नहीं घर में। जैसे लोग उससे डरे हुए हों या फिर—उसे एक और अनुभव भी हुआ। किसी बीमार के आसपास के लोग कैसे आहिस्ता बोलते हैं, बीमार की चेष्टाओं पर नाहक मुस्कराते हैं। कुछ वैसी लगी लोगों की प्रतिक्रिया। उसने एक-दो बार छेड़कर लड़ाई की कुछ कहानियाँ सुनाने की कोशिश की लेकिन लोग एक प्रयत्न सिद्ध मुस्कराहट दिखाकर कतरा गए। उसे यह भी लगा कि लोग जैसे—नहीं, उन्हें कुछ नहीं लगा। खुद वही किसी अज्ञात छाया से चौंक-चौंककर चुप हो जाता रहा—शायद किन्हीं दौड़ते आते अरने भैंसों की छाया—किन्हीं टैंकों की छाया या किन्हीं चींटों की कतारें—

रात लेटे-लेटे ये छायाएँ उसकी पिंडलियों पर रेंगती हुई उसकी गर्दन तक आ जातीं और वह घबराकर करवट बदल लेता। करवट बदलता तो एक अजीब धमक, बेढंगी-सी उसे घेर लेती—टैंकों के आगे चारों हाथ-पैरों पर घबराकर भागते हुए जैसी धमक हुई थी, वैसी।

अफ्रीक़ी रेगिस्तान में इसी तरह बेतहाशा भागती तमाम अँग्रेज़ी फ़ौजों के साथ भागते उसके अपने पैरों की धमक खुद उसकी पिंडलियों का रक्त-चाप बनकर सुनाई देती रही।

एक हल्का-सा खटका हुआ। बहुत हल्का-सा। उसने पलकों की संधि से देखा—उसकी जबान खूबसूरत बेटी रेगिस्तान के उस साँप जैसी चम-कीली बाँहें बढ़ाकर ताकपर पानी का गिलास रख रही है।

'सुनो'—लौटने की चेष्टा करते देख उसने आवाज़ दी। आवाज़ पर जैसे वह घबराकर दबे गले से चीख पड़ी।

वह हँसा। अजीब थी वह हँसी। जैसे रेगिस्तान का वह छिपकली और

घड़ियाल के बीच का घिनौना पशु निगले जाते वक्त, थोड़ा-सा जबड़ा खोल कर हाँफा था। ठीक उसी तरह निःशब्द वैसा वह, या शायद खिसियाहट में हाँफकर रह गया।

लड़की रुक गई।

पैरों में दर्द है—यह बात उसने कब कैसे कही, उसे नहीं मालूम। सिर्फ, उसी वीभत्स खिसियाहट में लिपटा वह लेटा रहा और लड़की काँपती हुई, गर्म, चिकनी उँगलियों से उसकी पिंडलियों और रानों की पेशियों को, दबाती रही।

अचानक फिर वही, रीढ़ की हड्डी के नीचे गर्म सूजे के धँसने का-सा अनुभव हुआ। उसे लगा वे चिकनी गर्म उँगलियाँ नहीं उन्हीं रेगिस्तानी चींटों का स्पर्श है और चींटों का वह कोलतार की तरह बहने वाला समूह उसकी टाँगों का गोश्त चर रहा है।

उसने बेपनाह काँपते हाँथों से लड़की का शरीर थाम लिया। लगा जैसे हाथ में उसकी संगीन आ गई हो। लौटते साहस को और अधिक निकट पाने के लिए उसने लड़की को अपने बाजू में लिटा लिया—ज़ोर-से सट गया। उसकी गर्म छातियों की रूई ने जैसे उसके कटे हाथ पर स्प्रिंग की ठंडक रख दी। वह और अधिक सट गया।

और तब अचानक उसे लगा जैसे रेगिस्तान के उस साँप का पिछला हिस्सा फिर उसकी टाँगों में उलझ गया। लड़की की उघड़ी हुई चिकनी रानों में उलझे उसके घुटने पशु की तरह थरथराने लगे। किसी पशु की तरह ही वह नंगा हो गया। रेगिस्तानी साँप की खाल की तरह उसने लड़की के शरीर से कपड़े नोंच दिए। उसके होंठ और दाँत लड़की के होंठों पर चिपक गए। किसी खुजलीवाले कुत्ते की तरह देर तक वह हाँफता रहा।

शिथिल होकर साँप के कटे शरीर की तरह लड़की के बग़ल में उसके गिरते ही लड़की इस तरह भागी जैसे वही रेगिस्तान की छिपकलीनुमा जानवर हो। दरवाजे तक पहुँचकर वह छाया ठिठकी, काँपी और घुटनोंपर ढेर हो गई। अँधेरे में कुछ अजीब नंगी, गंदी-सी सिसकियाँ उभरने लगीं।

□

नी

सिर्फ़ एक सस्ते-से जाज़ पर भी रूबी ज़रूरत से ज़्यादा मटकती है जैसे घोड़ी अपने ऊपर बैठने वाली मक्खियों को उड़ाने के लिए अपने पुट्ठों को हरकत दे रही हो। बहुत बुरी लगती है। गाती अच्छा है, विशेष रूप से एक गीत—सूरज के देश में एक टापू है जहाँ मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी अनन्त···

रूबी इन्तज़ार नहीं करेगी, यह सच है क्योंकि रात को वह बेहद थक जाती है और घर लौटते ही सो जाती है। बुझे वातावरण में रंग लाने के लिए बीच-बीच में उसका भाई उठकर उसके साथ नाचता है ताकि कुछ और जोड़े उठने का बहाना पाएँ लेकिन लोग पीते हैं और देखते हैं। पर रूबी किसी बात का इन्तज़ार अब नहीं करती। इसी 'बार' में पहले वह अपने पिता के साथ नाचा करती थी जो गनोरिया में चल बसा; दो साल से वह अपने भाई के साथ नाचती है जो आजकल एक हिन्दुस्तानी स्कूल मास्टरनी के साथ भाग निकलने की फ़िराक़ में रहता है। शायद दो महीने बाद रूबी अपने बेटे के साथ नाचकर काम चलाना शुरू कर देगी। वह किसी घटना का इन्तज़ार नहीं करती, पहलू कर लेती है और घटना उसकी बग़ल से गुज़र जाती है इसीलिए रूबी किसी बात का अर्थ कभी नहीं समझती। अपने गाए गीत की कड़ी का अर्थ भी उसे मालूम नहीं रहता। जैसे कोई नींद में बड़बड़ाए और तकिया खींचकर चिपटा ले इसी तरह रूबी गीत गाती है। हम सब सुनते हैं—सूरज के देश में एक टापू है···

डेज़ी जापानी पंखे की तरह का स्कर्ट और बिलियर्ड खेलने वाला छड़ी की तरह का शरीर लिए गुज़रती है और बुदबुदाकर मेरी टेबल पर रूबी के